भूमिका

प्रस्तुत शोध कार्य के विषय का चयन करते समय कुछ दुविधाएँ सामने आयी थी क्योंकि वर्तमान भरतनाट्यम् नृत्य शैली में नाट्यशास्त्र के करण विश्लेषणात्मक अध्ययन के प्रयोग विषय पर अपने मंतव्य तथा दृष्टि से दिखाई देने वाली सम्भावनाओं के बारे में सोचा तो उसका ज्यादा विस्तार हो पाए ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा था तथा जिन गुरुजनों से इस विषय पर चर्चा की गई थी। उनका यह मानना था कि इस विषय पर पद्मभूषण डॉ0 पद्मा सुब्रह्मण्यम् जी ने गहरा शोध कार्य किया हुआ है, इसके आगे क्या कार्य किया जाए, ऐसा प्रश्न आ खड़ा हुआ था, किन्तु शोधकर्ता की निर्देशिका डॉ0 स्मृति वाघेला जी के साथ जब इस विषय पर चर्चा हुई तो उन्होंने इस विषय पर एक अलग दृष्टिकोण से कार्य किए जाने वाले शोधकार्य के स्वरूप में रखा जा सकता है ऐसा समर्थन दिया। वे खुद पद्मा सुब्रह्मण्य जी की शिष्या है एवं करणों पर उनका अध्ययन रहा है तथा भरतनाट्यम् की वह प्राध्यापिका है। इस कारण उन्होंने दोनों ही नृत्य स्वरूपों का अध्ययन करने के बाद उन्हें अपने से अधिक इस नृत्य में सम्भावनाएँ दिखीं और उन्होंने इस विषय का चयन करने का समर्थन दिया।

सर्वप्रथम इस विषय की सार्थकता के लिए एक सूचित मार्ग बनाया गया, जिसमें इस शोध कार्य की विधि तथा पद्धति क्या होनी चाहिए तथा इस शोध कार्य से नृत्य जगत् को किस प्रकार लाभ हो सकता है। इसको

देखते हुए शोध कार्य का आरम्भ किया गया। वहाँ से शोधकर्ता की यात्रा शुरू हुई। उसमें नाट्यशास्त्र के ताण्डव लक्षण में दिए गए नृत्य करणों का प्रायोगिक अध्ययन सर्वप्रथम शोधकर्ता के द्वारा किया गया तथा नाट्यशास्त्र के आंगिक अभिनय के अन्य तत्वों का भी अध्ययन किया गया। पद्मभूषण डॉ0 पद्मा सुब्रह्मण्यम् जी द्वारा पुनर्जीवित किए गए नाट्यशास्त्र के आंगिक अभिनय के विविध तत्व तथा करणों के स्वरूप का अध्ययन करने के साथ–साथ भरतनाट्यम् के वर्तमान स्वरूप में सामंजस्य तथा भेद दोनों पर समान रूप में अध्ययन किया गया। जिसमें शोधार्थी ने पाया कि वर्तमान भरतनाट्यम् शैली नाट्यशास्त्र के अनेक तत्वों को समाहित किए हुए है किन्तु जिसका प्रयोग अपने–अपने विवेक बुद्धि से अलग–अलग घराने के गुरुजनों द्वारा किया गया है। अतः भरतनाट्यम् के विवध घराना/बानी अपनी–अपनी विशेषताएँ लेकर फूली–फली। शोधार्थी ने मूलतः कला क्षेत्र बानी को सीखा है जिसमें भरतनाट्यम् का स्वरूप महत्तम ज्यामितीय स्वरूप पर आधारित है, जिसमें रेखाओं का कोण का वर्तला या अर्द्धवतुलाकार का महत्व रहा है और इसी तल पर इस शैली का विकास हुआ है, जिसमें सख्तपन ज्यादा दिखाई देता है और लोच अन्य शैलियों के सापेक्ष कम दिखाई देता है। इस कारण शोधार्थी के लिए नाट्यशास्त्र के अन्य तत्व जो त्रिभंग या लोच से जुड़े हुए थे, उसे प्रायोगिक स्वरूप में समझना या सीखना थोड़ा मुश्किल रहा। किन्तु इसका एक लाभ यह भी हुआ कि दोनों नृत्य में अन्तर समझना आसान हो गया, जिसे कि वर्तमान भरतनाट्यम् नृत्य शैली में (कलाक्षेत्र) त्रिभंग का उपयोग नहीं होता, नृत्य हस्तों का प्रयोग नहीं होता। अन्य कुछ अंग तथा उपांगों का प्रयोग भी

नहीं होता। यह शैली अभिनय दर्पण पर ज्यादा आधारित दिखाई देती है, इस तथ्य को भलीभांति जानने के बाद जब नाट्यशास्त्र के अन्य तत्व जो कि वर्तमान भरतनाट्यम् नृत्य शैली में नहीं आते, उसे सीखने व प्रयोग में लाने से उस नृत्य का सौन्दर्य किस प्रकार बढ़ सकता है इसे शोधार्थी समझ पायी। जो कि भरतनाट्यम् नृत्य शैली में नहीं आते। इस शोध कार्य की विधि अनुसार मन्दिरों तथा मन्दिरों पर मिलने वाले अलग–अलग नृत्य शिल्पों का अध्ययन किया, उनमें मिलने वाली करणों की प्रतिमाओं को अलग छांटकर उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया तत्पश्चात् वर्तमान समय में इन करणों की शिक्षा लेने वाले तथा अपने नृत्य प्रस्तुतियों में उनका प्रयोग करने वाले कुछ नामांकित कलाकारों से साक्षात्कार किया। कुछ युवा नृत्यकार जो करणों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं या नृत्य में करणों का प्रयोग कर रहे हैं उनसे चर्चा की गयी।

वर्तमान भरतनाट्यम् की कृतियों में अपने समझ से करणों का तथा नाट्यशास्त्र के विविध तथ्यों का प्रयोग करके उनमें आने वाले अन्तर को देखा–समझा गया और इन प्रयोगों से भरतनाट्यम् के वर्तमान स्वरूपों को क्षति ना पहुँचाते हुए सौन्दर्यबोध किस प्रकार बढ़ सकता है उसका अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य से शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँच पाई है कि नाट्यशास्त्र में वर्णित करणों का यदि विवेकपूर्ण प्रयोग किया जाए तो उसमें मूल स्वरूप को क्षति पहुँचाए बिना उसमें बहुत सारी अनेक सम्भावनाएँ प्रकट होती हैं जो बदलते समय की मांग के अनुरूप हो सकती है तथा नामांकित गुरुजन तथा कलाकार एवं युवा नर्तकों के मत अनुसार नाट्यशास्त्र के तत्वों का समावेश यदि भरतनाट्यम् नृत्य शैली में किया

जाए तो वह अधिक प्रभावशाली हो सकती है और कालान्तर से ऐसे अनेक परिवर्तनों से होते हुए भरतनाट्यम् नृत्य शैली आज के स्वरूप तक पहुँची है उसी प्रकार यह परिवर्तन भी इस नृत्य शैली में शुभ फल लेकर आ सकता है और इस परिवर्तन से भरतनाट्यम् नृत्य स्वरूप को एक नया कलेवर प्राप्त हो सकता है।